IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"Role Of E-Libraries In Socio-Economic Development Of India"

"भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में ई–लाइब्रेरीज की भूमिका"

DR. KULESH KUMAR
Associate Professor- Library
V.A. Govt. Degree College, Atrauli (Aligarh)-202280

भूमिका :–

एक समय था जब ग्रन्थालय अपने परम्परागत रूप में ही स्थापित किए जाते थे जिनमें उपयोक्ताओं के उपयोग हेतु ग्रन्थों, पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों आदि का भौतिक रूप से संग्रह किया जाता था जो इस प्रकार व्यवस्थित होता था कि कोई भी उपयोक्ता अपनी वांछित पाठ्य सामग्री की खोज आसानी से कर सकता था किन्तु अब स्थितियां एवं परिस्थितियां बदल चुकी हैं। अब समय अत्यंत प्रगतिशील एवम् विकासमान हो चुका है। आज कम्प्यूटर, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा नेटवर्किंग की सुविधाएं प्राप्त होने के कारण ग्रन्थालयों के रूपों, प्रकारों, आकारों, कार्यों एवं सेवाओं में अत्यधिक परिवर्तन हो चुका है। ग्रन्थालयों में इन नवीन प्रकार की आधुनिकतम तकनीकियों का उपयोग किए जाने के कारण ग्रन्थालयों को अलग–अलग प्रकार के नये नामों से जाना जाने लगा है। जैसे– ई–लाइब्रेरी, डिजीटल लाइब्रेरी, ऑनलाइन/साइबर लाइब्रेरी, वर्चुअल लाइब्रेरी इत्यादि। सामान्यतया इन सभी प्रकार के ग्रन्थालयों को एक ही अर्थ में समझा जाता है एवं एक दूसरे के पर्याय के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

कीवर्ड . ग्रन्थालय, सूचना एवं संचार, आधुनिकतम तकनीकियों, साइबर लाइब्रेरी, वर्चुअल लाइब्रेरी

ई–लाइब्रेरी क्या है? (What is E-Library) :–

सामान्य अर्थों में ई–लाइब्रेरी एक ऐसा ग्रन्थालय होता है जहाँ पर्याप्त मात्रा में कम्प्यूटर पठनीय प्रलेखों को तथा अन्य उपलब्ध डेटाबेसों से सूचना को प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध होती है। ई–लाइब्रेरी वे पद्धतियाँ हैं जिनके द्वारा कोई भी उपयोक्ता अत्यंत वृहत सूचना का भी अभिगम प्राप्त कर सकता है। ई–लाइब्रेरी में प्रलेखों को इलैक्ट्रॉनिक रूप में परिवर्तित करना, उनका संग्रहण करना एवं उपयोग कराना, नेटवर्किंग के माध्यम से अन्य डेटाबेसों से सूचना उपलब्ध कराना, उपयोक्ताओं का सहयोग करना आदि समस्त कार्य सम्पन्न किए जाते हैं। ऐसे ग्रन्थालयों में कोई भी उपयोक्ता नेटवर्किंग व्यवस्था की सहायता से किसी भी सूचना/प्रलेख का त्वरित अभिगम प्राप्त कर सकता है।

ई–लाइब्रेरी का आशय सम्पूर्ण विश्व में उपलब्ध सूचना संसाधनों की साझेदारी करने के उद्देश्य से सूचना प्रौद्योगिकी की सुविधाओं का उपयोग करना है जिससे सही समय पर सही उपयोक्ता को सही सूचना उपलब्ध कराई जा सके। वर्तमान समय में पूरा विश्व धीरे–धीरे अत्यन्त ही लघु क्षेत्र (Global Village) के रूप में संकुचित हो रहा है। फिर भी उपयोक्ता को अपना अमूल्य समय नष्ट किए बिना वांछित सूचना प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। नवीनतम कम्प्यूटर प्रौद्योगिकियों, इंटरनेट, बेवसाइटों इत्यादि के प्रभाव से परम्परागत ग्रन्थालय धीरे–धीरे ई–लाइब्रेरी के रूप में विकसित हो रहे हैं।

ई–लाइब्रेरी के प्रमुख कार्य विभिन्न प्रौद्योगिकियों द्वारा ई–सूचना का संकलन करना, विश्लेषण करना, व्यवस्थित करना तथा उसे उपयोक्ताओं को उपलब्ध कराना होता है। परम्परागत ग्रंथालयों एवं सूचना के बदलते स्वरूपों के कारण ग्रंथालयी की भूमिका भी पूर्ण रूप से बदल रही है और उनकी भूमिका के आधार पर उन्हें अब ई–लाइब्रेरियन, डिजीटल लाइब्रेरियन, साइब्रेरियन, वेब लाइब्रेरियन आदि नामों से पुकारा जाने लगा है। ई–लाइब्रेरी के प्रबन्धक (लाइब्रेरियन) को ई–सूचना को उपयोक्ताओं को उपलब्ध कराने तथा उपयोक्ताओं को उपलब्ध सूचना का उपयोग कराने हेतु प्रशिक्षण की भी आवश्यकता होती है।

परिभाषाएं :–

विभिन्न विद्वानों एवं ग्रंथालय संस्थाओं ने ई–लाइब्रेरी को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है :–

1. E-Library Is An Organization That Provide The Resources, Offer Intellectual Access To Interpret, Distribute And Preserve The Integrity And Ensure The Persistence Overtime Of Collection By A Defined Community Or Set Of Communities. -Digital Library Foundation (Dlf)

2. E-Library Is A Collection Of Information That Is Electronically Preserved And Organized Which Offers Capabilities Beyond Those Of The Traditional Library.
-Michael Lesk

3. E-Library Is A System Providing A Community Of Users With Coherent Access To A Large Organized Depository Of Information & Knowledge.
-Clifford Lynch

4. E-Library Is A Global Virtual Library Of Thousands Of Networked Libraries.
-Largen.

ई–लाइब्रेरी की विशेषताएं :–

किसी भी ई–लाइब्रेरी में निम्न विशेषताएं होती है :–

1. ये ई–सूचना का वृहत संकलन केन्द्र होते हैं।
2. ये इनमें सूचना विभिन्न इलैक्ट्रोनिक स्वरूपों में उपलब्ध रहती है।
3. ये सूचना के इलैक्ट्रोनिक रूपों में उपयोग को प्रोत्साहित करते हैं।
4. ये उपयोक्ताओं का अन्य ग्रन्थालयों से समन्वय स्थापित करते हैं।
5. ये नेटवर्कों के माध्यम से अन्य विभिन्न ग्रन्थालयों से भी सम्बद्ध होते हैं।
6. ये पूर्णतः स्वचालीकृत होते हैं तथा इनमें कम्प्यूटर के माध्यम से कार्यों को सम्पन्न किया जाता है।
7. ये अत्यंत विशाल मात्रा में संकलित ई–सूचना का त्वरित अभिगम उपयोक्ताओं को उपलब्ध कराते हैं।?
8. ये नवीनतम कम्प्यूटर प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग पर बल देते हैं।
9. ये उपयोक्ताओं को नवीनतम सूचना उपलब्ध कराए जाने पर बल देते हैं।
10. ये ई–सूचना के अधिकतम उपयोग को प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।

ग्रन्थालयों के विभिन्न स्वरूप :–

ग्रन्थालयों के स्वरूपों में हुए विकास को हम निम्न प्रकार देख सकते हैं :–

	ग्रन्थालय का स्वरूप/प्रकार	विशेषता
1	परम्परागत ग्रन्थालय (Traditional Library)	इसमें प्रलेख मुद्रित रूप में होते हैं एवं सभी कार्य मानवश्रम विधि से (Manually) किए जाते हैं।
2	स्वचालित ग्रन्थालय (Automated Library)	इसमें अधिकांश प्रलेख मुद्रित रूप में ही होते हैं किन्तु कुछ प्रलेख इलैक्ट्रोनिक/यांत्रिक रूप में भी होते हैं। कुछ कार्य मानव श्रम विधि से तथा कुछ विशेष कार्य स्वचालित विधि से कम्प्यूटर अथवा अन्य उपकरणों के उपयोग द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं।
3	इलैक्ट्रोनिक लाइब्रेरी (Electronic Library)	इसमें प्रलेख मुद्रित रूप के साथ–साथ इलैक्ट्रोनिक रूप में भी होते हैं किन्तु सभी कार्य स्वचालीकृत होते हैं।
4	डिजीटल लाइब्रेरी (Digital Library)	इसमें सभी प्रलेख डिजीटल रूप में ही होते हैं तथा सभी कार्य स्वचालीकृत होते हैं। प्रलेखों को नेटवर्किंग के माध्यम से भी प्राप्त करने की सुविधा होती हैं।
5	ऑललाइन/साइबर लाइब्रेरी (Online/Cyber Library)	इसमें सभी प्रलेख कम्प्यूटर के उपयोग द्वारा इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन देखे जाते हैं। सभी कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से सम्पन्न किए जाते हैं।
6	आभासीय ग्रन्थालय (Virtual Library)	ये ग्रन्थालय मुद्रित स्रोत रहित होते हैं तथा ये केवल आभास किए जाते हैं। इसलिए इन्हें कागज विहीन (Paperless) अथवा दीवार रहित (Walless) लाइब्रेरी भी कहते हैं।

ई–लाइब्रेरी के लाभ :–

1. कोई भी उपयोक्ता नेटवर्क के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के ग्रन्थालयों में निहित पाठ्य सामग्री/ई–सूचना का सरलता से अभिगम प्राप्त कर सकता है।
2. ग्रन्थों/प्रलेखों के भौतिक एवं इलैक्ट्रोनिक दोनों रूपों की खोज आसानी से की जा सकती है।
3. इलैक्ट्रोनिक सूचना/स्रोतों का अभिगम तुरन्त सुलभ कराते हैं जो केवल कम्प्यूटर पर ही उत्पादित किए जाते हैं।
4. एक ही समय पर एक ही ई–सूचना का अनेक स्थानों से कई उपयोक्ता अभिगम प्राप्त कर सकते हैं।
5. सन्दर्भ हेतु ई–सूचना की सॉफ्ट या हार्ड कापी भी प्राप्त कर सकते हैं।

देश के विकास में ई–लाइब्रेरीज की भूमिका :–

चूँकि आधुनिक समाज के विभिन्न क्षेत्र–शिक्षा, व्यवसाय, उद्योग एवं व्यापार, कृषि, कला एवं संस्कृति, धर्म एवं आध्यात्म, मनोरंजन, खेल, अनुसंधान आदि क्षेत्रों पर भी देश का विकास आधारित है और इस समाज का प्रत्येक व्यक्ति चाहें वह छात्र, अध्यापक, शोधार्थी, वैज्ञानिक, न्यायाधीश, डॉक्टर, वकील, व्यवसायी, खिलाड़ी, पत्रकार, सरकारी या गैर सरकारी कर्मचारी या अधिकारी, अभिनेता हो या फिर राजनेता, सभी अपने–अपने स्तरों से अपने–अपने कार्यों एवं सेवाओं द्वारा देश के चहुँमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं एवं इसके लिए उन्हें समय–समय पर अपने क्षेत्र में हो रही प्रगति एवं शोध से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी एवं सूचना की आवश्यकता होती है। नवीनतम जानकारी एवं सूचना हेतु ग्रन्थालय महत्वपूर्ण स्रोत माने जाते हैं। अपने–अपने कार्य क्षेत्र की प्रगति एवं शोध में सलंग्न इन लोगों का समय अत्यंत बहुमूल्य होता है। यदि उनकी वांछित जानकारी/सूचना उन्हें न्यूनतम एवं सही समय में वांछित स्थान ही प्राप्त हो जाए तो यह देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

सामाजिक विकास में भूमिका :–

परम्परागत ग्रन्थालयों के बजाय ई–लाइब्रेरी उपयोक्ताओं को श्रेष्ठ, प्रामाणिक एवं नवीनतम सूचना एवं सूचना के स्रोत बहुत ही अल्प समय में, न्यूनतम श्रम पर ही ही उपलब्ध कराते हैं। ई–लाइब्रेरी उपयोक्ताओं को ऐसी ई–सूचना/ई–स्रोत भी उपलब्ध कराती है जो शिक्षा, शोध एवं विशिष्ट कार्य क्षेत्र की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं किन्तु उनका अभिगम भौगोलिक स्थिति, वित्तीय संसाधन, संस्थागत गोपनीयता, कापीराइट अथवा अन्य तकनीकी कारणों से प्रतिबन्धित हो सकता है। देश के सामाजिक विकास में ई–लाइब्रेरी की भूमिका निम्न प्रकार है :–

1. ई–लाइब्रेरी द्वारा सभी उपयोक्ता न्यूनतम समय में, न्यूनतम श्रम पर अपने कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित नवीनतम एवं प्रमाणिक सूचना/स्रोतों का त्वरित अभिगम प्राप्त कर सकते हैं।

2. समाज का प्रत्येक व्यक्ति, जो कम्प्यूटर संचालन में प्रशिक्षित हो, ई–लाइब्रेरी का अभिगम आसानी से प्राप्त कर सकता है।

3. ई–लाइब्रेरी में संग्रहित ई–सूचना/स्रोतों का अभिगम कहीं ही ई–लाइब्रेरी में, घर पर, कार्यालय में, यात्रा के दौरान अथवा अन्य सुविधाजनक स्थानों पर बैठकर भी प्राप्त किया जा सकता है।

4. समाज के जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक अथवा अन्य उपयोक्ता ई–लाइब्रेरी के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं अंधविश्वास आदि के उन्मूलन से सम्बन्धित, राष्ट्रीय समस्याओं जैसे–जनसंख्या वृद्धि, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, प्रदूषण आदि के निवारण एवं बचाव तथा विभिन्न सरकारी/गैर सरकारी संस्थाआं/कार्यालयों तथा उनसे सम्बन्धित योजनाओं, नियमों, कानूनों आदि के बारे में नवीनतम एवं प्रामाणिक जानकारी/सूचना प्राप्त कर उनका लाभ उठा सकते हैं तथा समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक कर सकते हैं।

5. आधुनिक समाज के नागरिक विभिन्न क्षेत्रों जैसे–शिक्षा, चिकित्सा, राष्ट्र रक्षा, विज्ञान, खेलकूद, फिल्म, मनोरंजन से सम्बन्धित सूचना स्रोतों/साहित्य का अभिगम प्राप्त कर अपने बौद्धिक स्तर में वृद्धि कर सकते हैं।

6. ई–लाइब्रेरी द्वारा आधुनिक समाज के लोग अपनी रूचि के अनुसार कला, साहित्य, संस्कृति, धर्म अथवा आध्यात्म से सम्बन्धित नवीनतम सूचना/ जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार ई–लाइब्रेरीज आधुनिक समाज के सभी उपयोक्ताओं को वांछित प्रामाणिक एवं नवीनतम जानकारी/सूचना बहुत ही कम समय में वांछित स्थान पर ही बहुत कम श्रम पर उपलब्ध करा सकती हैं जिससे उपयोक्ताओं के परम्परागत ग्रन्थों/सूचना स्रोतों का अध्ययन करने में नष्ट होने वाले बहुमूल्य समय की बचत होती है और वे बचे हुए समय का सदुपयोग अपने रूचि के अनुसार अपने कार्य क्षेत्र की प्रगति एवं नवीन कार्य में कर सकते हैं। जिससे समाज के शैक्षिक, बौद्धिक, मानसिक, वैज्ञानिक स्तर का विकास होगा जो अन्ततः देश के सामाजिक विकास में सहायक सिद्ध होगा।

आर्थिक विकास में भूमिका :–

हमारे देश के विभिन्न उच्च शिक्षण एवं शोध संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य संस्थाओं द्वारा अपने यहाँ पूर्व से स्थापित परम्परागत ग्रन्थालयों एवं सार्वजनिक ग्रन्थालयों का ई–लाइब्रेरीज के रूप में उन्नयन एवं नवप्रवर्तन अथवा नई ई–लाइब्रेरीज की स्थापना की जा रही है जो देश के आर्थिक विकास में निम्न प्रकार से सहायक सिद्ध हो रही हैं :–

1. परम्परागत ग्रन्थों/सूचना स्रोतों के अर्जन (क्रय), परम्परागत रख–रखाव, आदान–प्रदान, भण्डार, सत्यापन आदि प्रक्रियाओं पर होने वाले व्यय की बचत होती हैं क्योंकि ई–लाइब्रेरीज में इस प्रकार की प्रक्रिया को अपनाने की आवश्यकता नहीं होती है।

2. ग्रन्थालय के ग्रन्थालयी एवं अन्य विभिन्न स्तरीय कर्मचारियों की नियुक्ति एवं समय–समय पर प्रदान किये जाने वाले प्रशिक्षण, वेतन एवं सुविधाओं पर होने वाले व्यय की बचत होती है क्योंकि परम्परागत ग्रन्थालयों की तुलना में ई–लाइब्रेरी में काफी कम लगभग 10 प्रतिशत स्टाफ की ही आवश्यकता होती है।

3. उपयोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली परम्परागत सेवाओं जैसे–अर्न्तग्रन्थालय ऋण, संसाधन साझेदारी, प्रलेखन, संदर्भ सेवा, अनुवाद सेवा आदि पर होने वाले व्यय की बचत होती है क्योंकि ई–लाइब्रेरी में प्रदान की जाने वाली सभी सेवाएं स्वचालित/कम्प्यूटराइज्ड अथवा ऑनलाइन होती हैं।

4. परम्परागत ग्रन्थालय की तरह विशालकाय भवन के निर्माण की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि केवल एक बड़े कमरे/हॉल में ही रीडिंग रूम के समान ई–लाइब्रेरी संचालित की जा सकती है। अतः भवन के निर्माण में होने वाले वृहत व्यय ही बचत होती है।

इस प्रकार ई–लाइब्रेरीज की स्थापना द्वारा उपरोक्त प्रकार की वृहत स्तर पर बचतें निःसन्देह देश के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होगीं।

उपसंहार :–

इस प्रकार हम देखते हैं कि ई–लाइब्रेरी आधुनिक नवीन वातावरण के ग्रन्थालय हैं जो ई–सूचना के उपयोग को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। ई–लाइब्रेरीज की स्थापना एवं विकास विभिन्न प्रकार से देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं जिसके दृष्टिगत देश में परम्परागत ग्रन्थालयों का ई–लाइब्रेरी के रूप में उन्नयन तथा नवप्रवर्तन एवं नई ई–लाइब्रेरीज की स्थापना की जा रही है जो भविष्य में ग्रन्थालयों की प्रकृति एवं स्वरूप में व्यापक स्तर पर विकास की स्थिति का संकेत है। ई–लाइब्रेरीज की स्थापना एवं विकास के कारण थोड़े ही समय में वह दिन हमारे समक्ष आने वाला है जब परम्परागत ग्रन्थालयों का अस्तित्व समाप्त होता नजर आयेगा।

References

1. Kothari, D.V.: Development Of Electronic Library. Information Literacy In The Digital Age.New Delhi: Ess Ess, 2008. P.72-83.

2. Das, Tirath : E- Libraries: An Overview. Modern Trends In Library And Information Science. Jodhpur: Scientific, 2010. P.250-264.

3. Sharma, B.K. And Pandey, Ramanuj: Digital And E-Libraries: Issues And Challenges (Hindi). Granthalaya Vigyan. Vol.46. P.120-125(2015).

4. Devrajan, G. Information Technologies In Libraries. New Delhi: Ess Ess, 1999. P. 70-75.

5. Chaudhary (Gobinda G.). E-Library And Reference Services: Present And Future. Journal Of Documentation. Vol.58.No.3. 2002, P.258-283.